डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए, हिंदी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, पत्र 3

जयशंकर प्रसाद: एक परिचय एवं श्रद्धा सर्ग

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं –

खड़ी बोली का प्रयोग, गद्य का उद्भव, छापेखाने का आरंभ और फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना। इन चारों विशेषताओं के बावजूद भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग में काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग होता रहा। जयशंकर प्रसाद ने जब हिंदी काव्य – क्षेत्र में प्रवेश किया तब तक काव्य का माध्यम ब्रजभाषा ही थी। अतः उन्होंने भी कलाधर उपनाम से ब्रजभाषा में लिखना आरंभ कर दिया। इनके काव्यलेखन के आरंभिक दिनों में इनकी रचनाएँ 'इंदु' में प्रकाशित होती थीं। ये रचनाएँ आगे चलकर 'चित्राधार' और 'काननकुसुम' इन संग्रहों में शामिल हुईं। 'चित्राधार' उनका प्रथम काव्य-संग्रह है जिसमें 1906 से 1909 तक की रचनाएं संकलित हैं। इसके प्रथम संस्करण में ब्रजभाषा के साथ – साथ खड़ी बोली की भी रचनाएँ शामिल थीं परंतु दूसरे संस्करण में सिर्फ ब्रजभाषा की ही रचनाएँ रखी गईं। इस संग्रह में कुछ रचनाएँ पौराणिक तथा ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाकर इतिवृत्तात्मक शैली में लिखी गईं हैं तो कुछ रचनाओं में भक्ति और श्रृंगार का पुट है। प्रकृति विषयक कविताएँ भी हैं। प्रेमविषयक कविताओं की विशेषता यह है कि इनमें कहीं प्रणय भावना, कहीं भक्तिभावना तो कहीं विश्वप्रेम दिखाई देता है।

1913 में प्रकाशित 'काननकुसुम' उनकी खड़ीबोली रचनाओं का प्रथम संकलन है। इसी वर्ष 'करुणालय' और 'प्रेमपथिक' भी प्रकाशित हुआ। 1914 में 'महाराणा का महत्व' प्रकाशित हुआ। इसी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी खड़ी बोली को परिष्कृत करने हेतु प्रयास कर रहे थे, एवं कवियों से खड़ी बोली में काव्य – रचना करने की अपेक्षा रखते थे। प्रसाद उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतरे थे, परंतु खड़ीबोली में काव्यरचना करने के प्रयास में प्रसाद भी इतिवृत्तात्मकता और कृत्रिमता से ऊपर नहीं उठ पाए थे।

'प्रेमपथिक' प्रणय भावना से ओतप्रोत है, इस काव्यसंग्रह का एक – एक शब्द हृदय की गहरी अनुभूति से अनुप्राणित है। प्रेम में दर्शन का भी समावेश हो गया है, प्रेम की परिधि व्यक्ति से विस्तृत होकर आत्मा -परमात्मा तक पहुँच गई है।

प्रसाद का 'झरना' (1910) और 'आँसू' (1925) में प्रकाशित हुआ। इनमें प्रकृति और प्रेम के गीत हैं, जो स्वानुभूति से लबालब भरे हुए हैं। इन संग्रहों की रचनाओं में प्रेम से भरे हृदय की आकांक्षा, उत्कंठा, मिलन, वियोग और समर्पण दिखाई पड़ता है। 'झरना' की रचनाओं में ही प्रसाद की छायावादी प्रवृत्ति का स्पष्ट रूप दिखाई पड़ता है। छायावाद की स्पष्टता के साथ साथ इस संग्रह में वे द्विवेदी युगीन स्थूलता एवं इतिवृत्तात्मकता का पूर्ण त्याग करते हुए भी दिखाई पड़ते हैं।

'आँसू' में विरही ह्रदय के सहज –स्वाभाविक उच्छ्वास की अभिव्यक्ति हुई है। आरंभ में ही विरह –वेदना की अभिव्यक्ति हुई है –

"इस करुण कलित ह्रदय में

अब विकल रागिनी बजती

क्यों हाहाकार स्वरों में

वेदना असीम गरजती?"

इसका आरंभ वेदना के साथ हुआ है तो अंत विश्व कल्याण की भावना के साथ –

"सबका निचोड़ लेकर तुम

सुख से सूखे जीवन में

बरसो प्रभात हिमकन सा

आँसू बन विश्व सदन में"

1933 में 'लहर' प्रकाशित हुई। इसमें कवि सौंदर्य वर्णन, प्रणय की तीव्र अनुभूति, करुणा आदि भावों की जीवंत अभिव्यक्ति करते हैं।

'कामायनी' प्रसाद की अंतिम और प्रौढ़तम कृति है। कवि ने स्पष्ट किया है कि वैज्ञानिक विकास के साथ साथ मानव अतिशय बौध्दिक और यांत्रिक हो गया है। इच्छा, ज्ञान और क्रिया में विच्छेद उत्पन्न हो गया है, मानव संघर्षरत और अशांत हो गया है –

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है

इच्छा क्यों पूरी हो मन की

एक दूसरे से न मिल सकें

यही विडम्बना है जीवन की"

इन समस्याओं के समाधान के लिए कवि समरसता के सिद्धांत का समर्थन करते हैं –

"समरस थे जड़ या चेतन

सुंदर साकार बना था

चेतनता एक विलसती

आनंद अखंड घना था।"

प्रसाद ने कामायनी में यह स्पष्ट किया है कि मानव संस्कृति देव संस्कृति से हीन नहीं है।

कामायनी में कुल पन्द्रह सर्ग हैं। श्रद्धा का ही दूसरा नाम कामायनी है, वह काम की पुत्री है। श्रध्दा सर्ग में मनु और श्रद्धा के प्रथम परिचय को अत्यंत मनोहारी रूप में चित्रित किया गया है। कामायनी महाकाव्य में शांत, श्रृंगार और वीर रस का प्रयोग हुआ है। कामायनी आधुनिक युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। जयशंकर प्रसाद को कामायनी रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया।

कामायनी के श्रद्धा सर्ग में मनु और श्रद्धा की मुलाकात होती है, परिचय होता है और उनके बीच संवाद होता है। जलप्रलय के पश्चात मनु निराश से रहने लगे थे। एक दिन वे विचारों में लीन थे कि अचानक एक सुंदर स्त्री उनके सम्मुख आ जाती है और उनसे पूछती है कि इस निर्जन प्रदेश में आप कौन हैं? चिकने चर्म खंडों से ढका उस सुंदरी का अर्धनग्न शरीर ऐसा प्रतीत होता है जैसे काले बादलों के वन में बिजली के फूल खिल उठे हों। वह गांधार प्रदेश की रहनेवाली श्रद्धा थी। उसकी सुंदरता, व्यक्तित्व और बातों से मनु इतने प्रभावित हुए कि देखते ही रह गए।

हिमालय दर्शन के लिए वह घर से निकली थी और एक वृक्ष के नीचे खाद्य सामग्री देखकर उसे अनुमान हो गया था कि प्रलय होने के बाद भी कोई व्यक्ति अभी जीवित है। मनु ने कहा –

“मैं एक अभागा व्यक्ति हूँ, मैं ने अपनी आँखों से क्रूर विनाश देखा है।

श्रद्धा का उत्तर था –

“परिस्थितियों के चक्र में पिसकर ऐसी भावनाओं का उत्पन होना स्वाभाविक है। तुम्हारा अतीत दुःखमय रहा, यह सत्य है, पर तुम वैसे ही भविष्य की कल्पना क्यों करते हो?

भविष्य सुखमय हो सकता है। यदि जीवन में सुख ही सुख होता, तो भी प्राणी उससे ऊब जाता।

वस्तुओं के स्थायित्व को लेकर तुम क्या करोगे? जिसका जीवन समाप्त हो चुका है, जिसका उपयोग नष्ट हो चुका है, उसे मिट जाने दो।

परिवर्तन को नित्य नवीनता के रूप में देखो। किसी का एकाकी जीवन कभी सफल नहीं रहा था। बिना किसी हिचक के तुम्हारे जीवन में सुख भरने के लिए मैं सदैव तत्पर रहूँगी।

प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। कामायनी के श्रध्दा सर्ग में प्रसाद जी ने अपने उद्देश्यों का प्रतिपादन किया है और इन उद्देश्यों में प्रसाद जी के उदात्त विचार भी स्पष्ट रूप से पाठकों के मनमस्तिष्क तक पहुँचे हैं। श्रद्धा का संवाद निराश हो चुके पलायनवादी व्यक्ति को आशा और कर्मठता का मधुर संदेश देती है। श्रद्धा सर्ग के अनुसार जीवन को गतिशील बनाये रखने के लिए परिवर्तन आवश्यक है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कामायनी का श्रध्दा सर्ग उत्कृष्ट भावबोध और काव्यात्मक सौंदर्य से सम्पन्न है।